International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 12-02-2026, Accepted: 11-03-2026, Published: 26-03-2026
Volume 8, Issue 1, 2026, Page No. 29-30

21 वीं सदी में स्त्री विमर्श

डॉ. स्मृति उरांव
शोधार्थी, हिंदी विभाग, सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
21 वीं सदी में स्त्रीयों की स्थिति में बहुत सुधार आया है। भारत में स्त्रियों की स्थिति अब वैसी नहीं रही जैसी पहले पिछली सदियों में हुआ करती थी। 20 वीं सदी के अंत तक आते–आते स्त्रियों की शिक्षा में तथा उनके जीवन स्तर में बहुत परिवर्तन हुए। विभिन्न चुनौतियों और समस्याओं का सामना करती हुई भारतीय नारियां तेज गति से आगे बढ़ने लगी। 21 वीं सदी के प्रारंभ से ही स्त्रीयों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव आना शुरू हो गया था। आज भारतीय स्त्री समाज में एक नए रूप उभर कर सामने आई है।

मूल शब्दः सामाजिक दृष्टिकोण, कार्यकुशलता, सकुचित दायरे, अद्‌भूत प्रदर्शन, कार्यक्षमता

आज पूर्णतया स्त्रीयों के संबंध में नहीं कहा जा सकता है कि समाज में स्त्रियां पुरूषों द्वारा शोषण का शिकार हो रही है। क्योंकि अब समाज में स्त्रीयों को पुरूषों के समान अवसर प्रदान किया जा रहे। अब स्त्रीयां पुरूषों के साथ हर क्षेत्रों में कंधों से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है। समाज में उनके प्रति दृष्टिकोण बदल गया है। अब पितृ सपामक सोच धीरे–धीरे अंत होते दिखाई पड़ रही है। राष्ट्र निर्माण में स्त्रीयों की महत्वपूर्ण योगदान को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अगर देखें तो वैश्विक प्रतिस्पर्धा भरे दौर में पुरूष के साथ–साथ महिलाओं के योगदान की भी आवश्यकता है। इस उद्येश्य की पूर्ति के लिए स्त्रीयों को सशक्त होने की आवश्यकता है। धीरे–धीरे वे सशक्त हो भी रही हैं। इनके सशक्तीकरण हेतु केन्द्र सरकार और राज्य सरकार दोनों विभिन्न सार्थक कदम उठा रहे हैं। परिणाम स्वरूप आज भारतीय नारी समाज के सभी क्षेत्रों में अपना योगदान दे रहीं हैं। फिर चाहे वो साहित्य क्षेत्र हो, आर्थिक क्षेत्र हो या आंतरिक क्षेत्र हो इन सभी क्षेत्रों में वो अपना विशेष योगदान दे रही हैं।

20 वीं सदी में स्त्री विमर्श ने जोर पकड़ा और उसका प्रभाव वर्तमान में दिखाई पड़ रही है। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात महिला सशक्तिकरण पर संवैधानिक बल दिया गया। समाज में नारी पुरूष के साथ हर कदम में साथ निभा रही है। आज नारी का कार्यक्षेत्र अब सीमित नहीं रह गया है। आधुनिक होती हुई भारतीय नारी अब समाज के किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। घरेलू हिंसा, शोषण, अत्याचार, बलात्कार तथा यौन उत्पीड़न आदि विभिन्न समस्याओं से मजबूती के साथ लड़ती हुई भारतीय नारी आज निरंतर आगे बढ़ रही है। इन सभी समस्याओं से लड़ने के लिए आधुनिक नारी को अब किसी की आवश्यकता नहीं है। वह समस्त चुनौतियों का सामना करने में अब स्वयं सक्षम है। साहित्य क्षेत्र में देखें तो विभिन्न समस्याओं को अपनी लेखनी के माध्यम से व्यक्त करने वाली लेखिकाओं ने नारी की समस्याओं पर बेहतरीन ढंग से प्रकाश डाला है। इन लेखिकाओं ने कवि की दयनीय स्थिति पर केवल प्रकाश ही नहीं डाला बल्कि उन तमाम समस्याओं से बाहर निकलने के लिए नारी को प्रेरित भी किया।

लेखिकाओं ने अपनी लेखनी के माध्यम से अपने मनोभावों को व्यक्त करते हुए नारी को उसकी वास्तविक शक्ति का एहसास भी करवाया जिसके परिणाम स्वरूप नारी सशक्त एवं स्वावलंबी बनकर तमाम सामाजिक चुनौतियों का मजबूती के साथ सामना करने लगी।

उषा प्रियवंदा की कहानियों में वैचारिक द्वन्द और पुरानी तथा नई पीढ़ी का संघर्ष दिखाई देता है। वापसी कहानी में जहां परम्परागत मूल्यों की टकराहट है उनकी कई कहानियों में नारी के स्वरूप को देखने को मिलता है। उषा जी के उपन्यासों एवं कहानियों में नारियों के तकलिफ एवं उसके स्थिति को दर्शाया गया है।

कृष्णा सोबती की कहानियों में ग्रामीण और नगर सभ्यता की नारी का चित्रण मिलता है। बादलों के घेरे तीन पहाड़ यार जैसी कहानियों में नायिका मानो सत्य की तलाश कर रही है। किंतु यह सत्य इतना आसान भी नहीं है कृष्णा सोबती समाज के लोगों से गहरे रूप से जुड़ी हुई है। साहित्य के माध्यम से कृष्णा सोबती जी भी वर्तमान नारियों की समस्याओं को बताकर उसके समाधान को भी ध्यान में रखकर रचना की है।

वैसे ही अगर राजनैतिक क्षेत्र को देखें तो भारतीय नारी पीछे नहीं हटी है। पुरूषों के साथ–साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रही है। चाहे वो विधानसभा चुनाव हो, लोकसभा चुनाव हो यहां तक की हमारी राष्ट्रपति भी आज नारी ही है।

सरकार भी नारीयों के लिए अनेक प्रकार की योजनाओं को लागू कर रही है। जिसके परिणाम स्वरूप नारी आगे बढ़कर सशक्त हो रही है। वैज्ञानिक क्षेत्र से लेकर अनुसंधानों के क्षेत्रों में आगे बढ़ रही है। खोज में नारीयां पीछे नहीं हट रही है। आज अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए वो आगे बढ़ रही है।

आधुनिकीकरण के दौर में महिला सशक्तिकरण तेजी से आगे बढ़ा। भारत का बुद्धिजीवी वर्ग सदैव महिला सशक्तिकरण का पक्षधर रहा महिलाओं को संवैधानिक प्रावधानों के माध्यम से मजबूती प्रदान की गई है। वह अपनी सार्थकता तथा उपयोगिता को अपनी कार्यक्षमता तथा कार्यशैली से निरंतर प्रदर्शित करती रहती है।

भारत में अंग्रेजों के आगमन से जहां भारतीय संस्कृति को चोट पहुंचाने के प्रयास हुए वहीं आधुनिक विचारधारा के साथ–साथ भारतीय जनमानस में पाश्चात्य संस्कृति के बीज बोने के कुत्सित प्रयास भी किए गए। सामाजिक विकास, आर्थिक विकास तथा राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए समाज के सभी नागरीकों का योगदान अपेक्षित होता है। केवल पुरूषवादी सोच या पितृसत्रात्मक विचारधारा से कोई भी राष्ट्र उन्नति के पथ पर तेजी से अग्रसर नहीं हो सकता। किसी भी राष्ट्र के समस्त नागरिक चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, सम्प्रदाय भाषा भाषी, रंग, लिंग आदि से संबंध रखते हो, के संगठित योगदान से ही राष्ट्र को समृद्ध और खुशहाल बनाया जा सकता है। इसीलिए स्त्री पुरूष की संकुचित विचारधारा से बाहर निकलकर यदि दोनों

अपनी योग्यता एवं सामर्थ्य अनुसार समान रूप से तथा सद्भाव के साथ राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देते हैं। तभी एक समृद्ध व खुशहाल तथा शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण संभव हो सकता है।

आधुनिकता के आगमन एवं शिक्षा के प्रसार ने महिलाओं की स्थिति में सुधार लाना प्रारंभ किया। आधुनिक युग में स्वाधिनता के आगमन एवं शिक्षा के प्रसार ने महिलाओं की स्थिति में सुधार लाना प्रारंभ किया। आधुनिक युग में स्वाधिनता संग्राम के दौरान रानी लक्ष्मीबाई, विजया लक्ष्मी पंडित, सरोजनी रायडू, कमला नेहरू आदि जैसी महिलायें पूरी क्षमता एवं जोश के साथ सेवा के कार्यों में भाग लिया। श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा राष्ट्र को दिये जाने वाले योगदान महत्वपूर्ण है। जिन्होंने लम्बे समय तक देश की प्रधानमंत्री रहकर देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। विश्व आर्थिक मंच के अनुसार कार्य स्थलों पर महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि से कई सामाजिक और आर्थिक लाभ देखने को मिल रहे हैं। शिक्षा और रोजगार के अवसरों में वृद्धि से महिलाओं में अपने स्वास्थ्य तथा विकास के प्रति जागरूकता को बढ़ाने के साथ–साथ अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता में भी वृद्धि होती है। महिला सशक्तिकरण को प्राथमिकता देने के क्रम में वर्तमान भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने महिलाओं को पुरूषों के बराबर अवसर प्रदान करने के प्रयास किये हैं। जो सुरक्षा के पांच पहलू हैं– मां एवं शिशु की स्वास्थ्य सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा, वित्तीय सुरक्षा, शैक्षणिक एवं वित्तीय कार्यक्रमों के माध्यम से भविष्य की सुरक्षा तथा महिलाओं की सलामती है। वर्तमान समय में नारी उत्थान के लिए सरकार द्वारा अनेक प्रकार की योजनाएं चलाई जा रही है। इसका लाभ महिलाओं को मिल भी रही है। लेकिन कई क्षेत्रों में इन सभी योजनाओं का लाभ मिल पाना काफी मुश्किल भरा हो रहा है।

निष्कर्ष

21 वीं सदी जिस प्रकार महिलाओं की स्थिति में सुधार आया है। वह प्रसंशनीय है। आज की नारी पुरूषों की अन्याय व अत्याचार को चुपचाप सहन नहीं करती वह तो उनका कड़ा विरोध करती है। अगर देखा जाए तो ग्रामीण स्त्रियां आज गांवों की मुखिया, उच्च अधिकारी भी बन रही है। लेकिन कुछ स्थानों में आज भी स्त्रियों की दशा दयनीय है। पुरूष के हाथों बेईज्जत हो रही है। शराबी पति के द्वारा मारपीट सहती स्त्री अपना भाग्य मानती हुई जिन्दगी बिता रही है। स्त्री विमर्श, विमर्श के रूप में साहित्य मे तब आया जब स्त्रियां शिक्षित होने लगी। अपने अधिकारों को जानने समझने लगी, शोषण और शोषक को पहचानने लगी साहित्य के माध्यम से समाज के सामने उसे रखने का साहस किया।

संदर्भ सूची :–

1. मृदुला गर्ग, कंठगुलाब, भारतीय ज्ञान पीठ प्रकाशन दिल्ली 1996
2. सुषमा सहरावत, दायित्व निर्वाह की प्राचीरों में बंद होती स्त्री आकांक्षा की कथा, पचपन खम्भे लाल दिवारें, 2018
3. जयंती, खाना बदोश ख्वाहिशें, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली 2009
4. डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव महिला सशक्तिकरण भाग– 1 ओमेगा पब्लीकेशन, दरियागेषा नई दिल्ली।
5. योगिता यादव, ख्वाहिशें के खांडवन सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली 2017